



सरसों की उन्नत किस्म 'आरएच-1706' से बढ़ी आमदनी

एम.एस. मीना¹, जे.पी. मिश्र² और स्नेहा राठोर³

हरियाणा के रोहतक जिले के बलियाना गांव के प्रगतिशील किसान श्री जय कुमार ने पारंपरिक धान-गेहूं फसल प्रणाली से आगे बढ़कर फसल विविधीकरण और वैज्ञानिक खेती की दिशा में कदम बढ़ाया। सरसों की उन्नत प्रजाति आरएच-1706 के साथ एकीकृत फसल प्रबंधन तकनीकों को अपनाकर उन्होंने न केवल सरसों की उपज और लाभ में वृद्धि की, बल्कि मृदा के स्वास्थ्य और उपलब्ध संसाधनों के बेहतर उपयोग की दिशा में भी सार्थक प्रयास किया। उनका अनुभव दर्शाता है कि उन्नत प्रजाति, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन तथा खरपतवार, कीट एवं रोगों के वैज्ञानिक प्रबंधन से सरसों की खेती को अधिक उत्पादक और लाभकारी बनाया जा सकता है। श्री जय कुमार की यह पहल क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए फसल विविधीकरण और वैज्ञानिक सरसों उत्पादन का एक उपयोगी उदाहरण प्रस्तुत करती है।

हरियाणा देश का एक प्रमुख कृषि राज्य है, जहां धान-गेहूं की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है और इसका देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है। हालांकि, लंबे समय से एक ही फसल प्रणाली अपनाने और कृषि आदानों के अधिक प्रयोग से मृदा की गुणवत्ता एवं संसाधन उपयोग दक्षता प्रभावित हुई है। इससे खेती की लागत बढ़ने के साथ किसानों की आय पर भी प्रभाव पड़ा है। ऐसे में फसल विविधीकरण के लिए तिलहनी

¹प्रधान वैज्ञानिक; ²निदेशक एवं ³वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता, भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र-II, जोधपुर-342005

और दलहनी फसलों को शामिल करना आवश्यक है।

रोहतक जिला उत्तर-पश्चिमी भारत के अर्धशुष्क कृषि जलवायु क्षेत्र में स्थित है, जहां की बलुई दोमट मृदा और जलवायु सरसों की खेती के लिए उपयुक्त है। कई किसान अभी भी सरसों की प्रचलित किस्मों और पारंपरिक कृषि पद्धतियों को अपना रहे हैं, जिससे उपज और लाभ प्रभावित होते हैं। साथ ही खरपतवार, रोग एवं कीट भी उत्पादन में बाधक हैं। ऐसे में उन्नत किस्मों के साथ एकीकृत फसल प्रबंधन अपनाना उपयोगी है। धान-सरसों-ग्रीष्मकालीन मूंग फसल प्रणाली

धान-गेहूं फसल प्रणाली का उपयोगी विकल्प बनकर उत्पादन, मृदा के स्वास्थ्य और किसानों की आय में सुधार कर सकती है।

श्री जय कुमार, रोहतक जिले की सांपला तहसील के बलियाना गांव के प्रगतिशील किसान हैं। इनके पास 3 हैक्टर बलुई दोमट भूमि है, जो विभिन्न फसलों की खेती के लिए उपयुक्त है। पहले वे क्षेत्र के अन्य किसानों की तरह पारंपरिक धान-गेहूं फसल प्रणाली अपनाते थे। लगातार इस फसल प्रणाली को अपनाने से मृदा की उर्वरता प्रभावित हो रही थी और खेती से अपेक्षित आय भी प्राप्त नहीं हो पा रही थी।

‘आरएच-1706’ विशेष किस्म

- ‘आरएच-1706’ की संभावित उपज 3,364 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर है तथा इसके बीज मोटे और आकर्षक होते हैं।
- इसमें तेल की मात्रा 38.0-39.7 प्रतिशत तथा इरुसिक अम्ल की मात्रा 2 प्रतिशत से कम होती है।
- यह किस्म येलो मोजैक वायरस के लिए प्रतिरोधी तथा प्रमुख रोगों एवं माहू के प्रति सहनशील है।
- यह लगभग 140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है, इसलिए इसे विभिन्न फसल प्रणालियों में आसानी से शामिल किया जा सकता है।
- अपेक्षाकृत कम अवधि में पकने और बेहतर उत्पादन क्षमता के कारण यह किस्म किसानों के लिए लाभकारी विकल्प हो सकती है।

कम उत्पादकता के प्रमुख कारणों में पुरानी किस्मों का उपयोग, खरपतवारों का प्रकोप और पोषक तत्वों का उचित प्रबंधन न होना शामिल था। इसके अलावा रोगों और माहू के प्रकोप से भी फसल को नुकसान होता था। इन समस्याओं के समाधान और खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए श्री जय कुमार ने सरसों की उन्नत प्रजाति ‘आरएच 1706’ के साथ एकीकृत फसल प्रबंधन तकनीकों को अपनाया, जिससे उनकी सरसों की खेती में सकारात्मक बदलाव की शुरुआत हुई।

उत्पादन तकनीक

प्रदर्शन के दौरान सरसों की बेहतर उपज के लिए अनुशंसित उत्पादन तकनीकों को अपनाया गया। बुआई से पहले बीज को कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत बेटेबल पाउडर, फॉस्फेट सॉल्युबिलाइजिंग बैक्टीरिया और एजोटोबैक्टर से उपचारित किया गया। खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडीमेथीलिन का प्रयोग किया गया, जिससे खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण होने के साथ मानव श्रम की आवश्यकता भी कम हुई। संतुलित पोषण के लिए नाइट्रोजन एवं फॉस्फोरस की अनुशंसित मात्रा 24:8:0 के अनुपात में दी गई। ऑल्टरनेरिया झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए समय पर मैकोजेब और कार्बेण्डाजिम का छिड़काव किया गया।

पूरी फसल अवधि के दौरान वैज्ञानिकों ने खेत का नियमित निरीक्षण कर किसान को आवश्यक तकनीकी सलाह एवं खेत पर

नई तकनीक का प्रयोग

सरसों की उपज बढ़ाने के उद्देश्य से रबी 2025-26 के दौरान रोहतक जिले में कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा तिलहन पर समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किए गए। ये प्रदर्शन भारत सरकार के खाद्य तेल-तिलहन पर राष्ट्रीय मिशन (एनएमईओ-ओएस) के अंतर्गत किए गए, जिसका उद्देश्य प्रमुख तिलहनी फसलों के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना और खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ना है।

- सरसों की उन्नत प्रजाति ‘आरएच 1706’, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा विकसित की गई है।
- किसान के खेत पर कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा इस प्रजाति का एकीकृत फसल प्रबंधन तकनीकों के साथ प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन के अंतर्गत उन्नत बीज एवं अन्य आदानों के लिए योजना के प्रावधानों के अनुसार अधिकतम 9,000 रुपये प्रति हैक्टर तक सहायता दी गई, जबकि शेष आदानों का खर्च किसान ने सहभागिता के आधार पर वहन किया।
- मृदा के स्वास्थ्य में सुधार, संसाधनों के बेहतर उपयोग और किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से धान-सरसों-ग्रीष्मकालीन मूंग फसल प्रणाली अपनाने के लिए भी किसानों को प्रोत्साहित किया गया।

सारणी: किसान पद्धति एवं सामूहिक अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का तुलनात्मक विवरण

विवरण	किसान पद्धति	प्रदर्शन	वृद्धि (प्रतिशत)
उपज (कि.ग्रा./हैक्टर)	2,060	2,450	18.9
कुल लागत (रुपये/हैक्टर)	28,640	30,760	-
सकल आय (रुपये/हैक्टर)	1,32,664	1,60,720	-
शुद्ध आय (रुपये/हैक्टर)	1,04,024	1,29,960	24.9
लाभ:लागत अनुपात	4.63	5.22	-

मार्गदर्शन प्रदान किया। इसके साथ ही किसान प्रशिक्षण, खेत दिवस और प्रदर्शन भ्रमण आयोजित किए गए, जिससे किसानों का ज्ञान और उन्नत तकनीकों के प्रति विश्वास बढ़ा।

प्रदर्शन परिणाम एवं अनुभव

एकीकृत फसल प्रबंधन तकनीकों को अपनाकर श्री जय कुमार ने पारंपरिक खेती से वैज्ञानिक सरसों उत्पादन की ओर कदम बढ़ाया। ‘आरएच-1706’ किस्म की अधिक उपज क्षमता, मोटे बीज, अच्छी तेल गुणवत्ता, कम इरुसिक अम्ल, रोगों एवं येलो मोजैक वायरस के प्रतिरोध तथा माहू के प्रति सहनशीलता के कारण उन्हें बेहतर परिणाम प्राप्त हुए। इस प्रदर्शन से सरसों की उपज और लाभ में वृद्धि के साथ फसल विविधीकरण एवं एकीकृत फसल प्रबंधन की उपयोगिता भी सामने आई। बेहतर परिणामों से श्री जय कुमार का उन्नत उत्पादन तकनीकों के प्रति विश्वास बढ़ा और उन्हें वैज्ञानिक पद्धति से सरसों की खेती जारी रखने के लिए प्रोत्साहन मिला।

प्रदर्शन में सरसों की उपज 20.6 क्विंटल प्रति हैक्टर से बढ़कर 24.5 क्विंटल प्रति हैक्टर हो गई, जो 18.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है। इसी प्रकार शुद्ध आय 1,04,024 रुपये प्रति हैक्टर से बढ़कर 1,29,960 रुपये प्रति हैक्टर हो गई, जिसमें 24.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की

गई। लाभ:लागत अनुपात भी 4.63 से बढ़कर 5.22 हो गया। प्रदर्शन के बेहतर परिणामों से लगभग 20 साथी किसानों को भी इस तकनीक को अपनाने के लिए प्रोत्साहन मिला।

समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन से यह स्पष्ट हुआ कि ‘आरएच 1706’ किस्म को एकीकृत फसल प्रबंधन के साथ अपनाने से सरसों की उपज और किसानों की आय में वृद्धि की जा सकती है। धान-गेहूँ की पारंपरिक फसल प्रणाली के स्थान पर धान-सरसों-ग्रीष्मकालीन मूंग फसल प्रणाली अपनाने से उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करने के साथ मृदा के स्वास्थ्य और खेती की स्थिरता में भी सुधार किया जा सकता है।

सरसों की उन्नत किस्म ‘आरएच-1706’ को एकीकृत फसल प्रबंधन के साथ अपनाकर श्री जय कुमार ने सरसों की उत्पादकता बढ़ाने के साथ अधिक लाभ प्राप्त किया। इन्होंने वैज्ञानिक उत्पादन तकनीकों को अपनाया और अन्य साथी किसानों को भी इन्हें अपनाने के लिए प्रेरित किया। साथी किसानों ने प्रदर्शन के विभिन्न चरणों में सक्रिय भागीदारी की। बेहतर परिणामों के कारण श्री जय कुमार क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बने हैं और उन्हें उन्नत सरसों उत्पादन से संबंधित सलाह भी दे रहे हैं। ■